अर्ह विद्या जैन शोध संस्थान

Arham Vidhya Jain Shodh Sansthan

(As per NEP 2020 and CBCS Ordinance 14 (2)

एम. ए. (जैनोलॉजी)

M.A. (Jainology)

AWADESH PRATAP SINGH UNIVERSITY
REWA (MP)

कार्यक्रम का नाम: एम.ए. (जैनोलॉजी)

परिचय:

जैन धर्म एक प्राचीन भारतीय धार्मिक एवं दार्शनिक परंपरा है, जिसकी निरंतरता आज तक बनी हुई है। यह कार्यक्रम विद्यार्थियों को जैन दर्शन से संबंधित प्रमुख सिद्धांतों एवं विचारों का व्यापक अध्ययन प्रदान करने हेतु तैयार किया गया है। इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों को जैन सिद्धांतों के व्यवहारिक अनुप्रयोग से परिचित कराया जाएगा। इस कार्यक्रम की एक विशेषता यह भी है कि इसमें प्राकृत भाषा का अध्ययन सुसंगठित वैकल्पिक पाठ्यक्रमों के माध्यम से करवाया जाएगा।

पात्रता:किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से जैनोलॉजी या किसी भी विषय में स्नातक डिग्री।

अवधि:2 वर्ष (4 सेमेस्टर)

क्रेडिट:एक क्रेडिट का अर्थ 60 मिनट की कुल 15 शिक्षण इकाइयों (व्याख्यान, प्रायोगिक कार्य या ट्यूटोरियल) के बराबर होगा।

माध्यम:अध्यापन एवं परीक्षा का माध्यम हिन्दी एवं अंग्रेज़ी दोनों होगा।

शिक्षण विधियाँ:

1. व्याख्यान
2. ट्यूटोरियल
3. चर्चा सत्र
4. असाइनमेंट्स एवं प्रोजेक्ट्स

कार्यक्रम के शैक्षणिक उद्देश्य (PEOs):

PEO 1: जैन दर्शन के सिद्धांतों को स्पष्ट करना ।

PEO 2: प्राचीन एवं मध्यकालीन जैन आचार्यों के शास्त्रीय ग्रंथों की व्याख्या करने की दक्षता विकसित करना।

PEO 3: साहित्य, शासन, नैतिकता और शांति अध्ययन में जैन योगदान की सराहना करना।

PEO 4: भारतीय सांस्कृतिक और दार्शनिक परंपराओं के व्यापक संदर्भ में जैन धर्म को स्थान देना।

PEO 5: समकालीन संदर्भों में जैन सिद्धांतों के प्रयोग पर समालोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाना।

कार्यक्रम के विशिष्ट परिणाम (PSOs):

PSO 1: जैन दर्शन एवं सिद्धांतों की गहन समझ विकसित करना।

PSO 2: प्राकृत एवं संस्कृत में मूल ग्रंथों के अध्ययन के माध्यम से जैन धर्म के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक योगदान की सराहना करना।

PSO 3: समकालीन वैश्विक चुनौतियों पर जैन सिद्धांतों का समालोचनात्मक अनुप्रयोग करना।

PSO 4: जैन सिद्धांतों के अध्ययन के माध्यम से विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक क्षमताओं का विकास करना

2-Year PG Programme (2-Year MA Jainology)

Applicable to all UTDs/Colleges

COURSE TYPE						
Year	**Semester**	**Courses Level**	**Core Papers**	**Practicum Papers**	**Internship/VAC**	**Total Credits**
I	Sem-1	400	CC - 11: जैन परंपरा का इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं कला (6credits)	PC - 11: जैन आचार मीमांसा (4credits)	Seminar (2 credits)	22
		400	CC - 12: जैन द्रव्य मीमांसा (6 credits)	PC – 12 :जैन ध्यान योग एवं कर्म मीमांसा (4 credits)		
	Sem-2	400	CC - 21: जैन दार्शनिक प्राकृत साहित्य (6credits)	PC - 21: जैन ज्ञान मीमांसा एवं जैन न्याय (4credits)	VAC (2 credits) जैन दर्शन के प्रमुख स्तोत्र	22
		500	CC - 22: जैन दार्शनिक संस्कृत साहित्य (6credits)	PC - 22: जैन धर्म दर्शन एवं महात्मा गाँधी (4credits)		
NOTE: STUDENT WHO EXISTS AT THE END OF Ist YEAR SHALL BE AWARDED A POSTGRADUATE DIPLOMA.						

OPTION-1 : ONLY COURSE WORK

Applicable to all UTDs/Colleges

COURSE TYPE						
Year	**Semester**	**Courses Level**	**Core Papers**	**Practicum Papers**	**Internship/VAC**	**Total Credits**
II	Sem-3	500	CC - 31: जैन दर्शन और भारतीय दर्शन : तुलनात्मक अध्ययन (6credits)	PC - 31: जैन धर्म - दर्शन के मौलिक सिद्धांत (4credits)	Internship (2 credits)	22
		500	CC - 32: जैन धर्म - दर्शन और भारतीय धर्म - दर्शन (6 credits)	PC - 32: आचार्य कुन्दकुन्द और उनका साहित्य (4 credits)		
	Sem-4	500	CC - 41: जैन शिल्प, स्थापत्य एवं शिक्षा (6credits)	PC - 41: आधुनिक प्राकृत जैन साहित्य (4credits)	VAC (2 credits) जैन दर्शन एवं मनोविज्ञान	22
		500	CC - 42: जैन दर्शन में आप्त मीमांसा (6credits)	PC - 42: लघु शोध प्रबंध (4credits)		

OPTION-2 : COURSE WORK & RESEARCH WORK

Applicable to all UTDs/Colleges

COURSE TYPE						
Year	**Semester**	**Courses Level**	**Core Papers**	**Practicum Papers**	**Internship/VAC**	**Total Credits**
II	Sem-3	500	CC - 31: जैन दर्शन और भारतीय दर्शन : तुलनात्मक अध्ययन (6credits)	PC - 31: जैन धर्म - दर्शन के मौलिक सिद्धांत (4credits)	Internship (2 credits)	22
		500	CC - 32: जैन धर्म - दर्शन और भारतीय धर्म - दर्शन (6 credits)	PC - 32: आचार्य कुन्दकुन्द और उनका साहित्य (4 credits)		
	Sem-4				Research thesis / Project/ Patent (22 Credits)	22

OPTION-3 : RESEARCH WORK

(Applicable to all UTDs/Colleges having research centers recognized by the University)

COURSE TYPE			
Year	**Semester**		**Total Credits**
II	Sem-3	Research thesis/ Project/ Patent (22 Credits)	22
	Sem-4	Research thesis/ Project/ Patent (22 Credits)	22

NOTE:-(1)UTDs/Colleges with Research Centers have the choice of running all the OPTIONS mentioned above.
(2)Students having 4 year Under Graduate Degree (Honours /Honours with Research) are eligible for direct lateral entry in the Semester-III of 2-Year PG Programme.

Curriculum Framework

Year 1

Semester 1

Course level	Course Name	Course type	Credits
400	CC - 11: जैन परंपरा का इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं कला	Core Course	05
400	CC - 12: जैन द्रव्य मीमांसा	Core Course	05
400	PC - 11: जैन आचार मीमांसा	Core Course	05
400	PC – 12 :जैन ध्यान योग एवं कर्म मीमांसा	Core Course	5
	Internship/ Apprenticeship Or Seminar		02
	Total		22

Year 1

Semester 2

Course level	Course Name	Course type	Credits
400	CC - 21: जैन दार्शनिक प्राकृत साहित्य	Core Course	05
500	CC - 22: जैन दार्शनिक संस्कृत साहित्य	Core Course	05
400	PC - 21: जैन ज्ञान मीमांसा एवं जैन न्याय	Core Course	05
500	PC - 22: जैन धर्म दर्शन एवं महात्मा गाँधी	Core Course	05
	VAC जैन दर्शन के प्रमुख स्तोत्र		02
	Total		22

Year 2

Semester 3

Course level	Course Name	Course type	Credits
500	CC - 31: जैन दर्शन और भारतीय दर्शन : तुलनात्मक अध्ययन	Core Course	05
500	CC - 32: जैन धर्म - दर्शन और भारतीय धर्म - दर्शन	Core Course	05
500	PC - 31: जैन धर्म - दर्शन के मौलिक सिद्धांत	Practicum Paper	05
500	PC - 32: आचार्य कुन्दकुन्द और उनका साहित्य	Practicum Paper	5
	Internship/ Apprenticeship Or Seminar		02
	Total		22

Year 2

Semester 4

Course level	Course Name	Course type	Credits
500	CC - 41: जैन शिल्प, स्थापत्य एवं शिक्षा	Core Course	05
500	CC - 42: जैन दर्शन में आप्त मीमांसा	Core Course	05
500	PC - 41: आधुनिक प्राकृत जैन साहित्य	Practicum Paper	05
500	PC - 42: लघु शोध प्रबंध	Practicum Paper	05
	VAC जैन दर्शन एवं मनोविज्ञान		02
	Total		22

Year-1

Semester-1

Course code	CC - 11
Course name	**जैन परंपरा का इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं कला**
ईकाई 1	प्रागैतिहासिक काल में जैन धर्म: भगवान ऋषभदेव से अरिष्टनेमि तक की परंपरा; भगवान पार्श्वनाथ एवं महावीर का जीवन चरित्र; महावीर कालीन विचार धाराएं; भगवान महावीर की गणधर परंपरा; देश-विदेश में जैन धर्म (उत्तर भारत, दक्षिण भारत और विदेशों में जैन धर्म)
ईकाई 2	जैन संस्कृति की विशेषताएं: अहिंसक जीवन शैली; तीर्थ स्थापना एवं इतिहास; जैन कर्मकांड; जैन पर्व एवं इतिहास
ईकाई 3	मूर्तिकला; चित्रकला; स्तूप; गुफा; प्राचीन मंदिर
ईकाई 4	प्रमुख आगम साहित्य एवं वाचनाएँ
ईकाई 5	दार्शनिक साहित्य; पुराण एवं चरित्र; काव्य एवं कथा साहित्य; योग साहित्य; प्राकृत साहित्य

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. जैन साहित्य का इतिहास, पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री।
2. जैन दर्शन और संस्कृति का इतिहास, डॉ भागचंद भास्कर।
3. जैन पर्व, डॉ रमेश चंद्र।

4. जैनधर्म, पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री।
5. प्राकृत साहित्य का इतिहास, प्रो. जगदीश चंद्र जैन।
6. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान, डॉ हीरालाल जैन।
7. जैन दर्शन, मनन और मीमांसा, आचार्य महाप्रज्ञ।
8. युगदृष्टा: भगवान ऋषभदेव पर उपन्यास, मुनि प्रणम्य सागर।

Course code	CC - 12
Course name	**जैन द्रव्य मीमांसा**
ईकाई 1	सत् का स्वरुप; द्रव्य - गुण - पर्याय; द्रव्य - गुण - पर्याय भेदाभेदवाद
ईकाई 2	लोक का स्वरुप
ईकाई 3	जीवास्तिकाय (आत्मा)
ईकाई 4	पुद्गलास्तिकाय; परमाणु स्वरुप एवं उसकी बंध प्रक्रिया; धर्म अस्तिकाय; अधर्म अस्तिकाय
ईकाई 5	आकाश अस्तिकाय; काल अस्तिकाय में क्यों नहीं?

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. पंचास्तिकाय, आचार्य कुन्दकुन्द।
2. तत्त्वार्थ सूत्र, आचार्य उमास्वामी।
3. जीव विज्ञान, मुनि प्रणम्य सागर।
4. लोक विज्ञान, मुनि प्रणम्य सागर।
5. द्रव्यसंग्रह प्रश्नोत्तरी, मुनि प्रणम्य सागर।
6. जैन दर्शन, मनन और मीमांसा, आचार्य महाप्रज्ञ।
7. जैन दर्शन, महेंद्र कुमार न्यायाचार्य।

8. दर्शन और चिंतन, डॉ सुखलाल संघवी।

Course code	PC - 11
Course name	**जैन आचार मीमांसा**
ईकाई 1	आचार की जैन अवधारणा तथा उसकी तात्विक पृष्ठभूमि; जैनाचार के सिद्धांतों का उद्भव और विकास
ईकाई 2	जैन श्रावकाचार का समग्र अध्ययन; अणुव्रत, गुणव्रत, शिक्षाव्रत; ग्यारह प्रतिमाएं
ईकाई 3	जैन श्रमणाचार का समग्र अध्ययन; पंचमहाव्रत, गुप्ति, समिति, मूलगुण, षट् आवश्यक, परिषह
ईकाई 4	रत्नत्रय: सम्यग्दर्शन का स्वरुप; सम्यग्दर्शन के अंग; सम्यगज्ञान का लक्षण; अनुयोग एवं द्वादशांग; सम्यग्चारित्र का स्वरुप एवं भेद; रत्नत्रय का फल
ईकाई 5	सल्लेखना का लक्षण एवं विधि; सल्लेखना का फल; सल्लेखना के पाँच अतिचार

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. रत्नकरण्डक श्रावकाचार, आचार्य समन्तभद्र।
2. मूलाचार, आचार्य वट्टकेर।
3. श्रावकाचार, वसुनंदिश्रावकाचार।
4. तत्त्वार्थ सूत्र, आचार्य उमास्वामी।

Course code	PC - 12
Course name	**जैन ध्यान योग एवं कर्म मीमांसा**
ईकाई 1	जैन योग स्वरुप; हरिभद्र की योग दृष्टियाँ; ध्यान का स्वरुप एवं भेद; ध्यान के लाभ
ईकाई 2	प्रेक्षाध्यान; द्वादश अनुप्रेक्षा; लेश्या का स्वरुप एवं भेद
ईकाई 3	अर्हं ध्यान योग; विज्ञान के परिपेक्षय में अर्हं ध्यान योग; समाधी की अवधारणा और भेद; ध्यान का विषय- कर्मस्थान
ईकाई 4	कर्म स्वरुप, बंध हेतु एवं प्रक्रिया; कर्म के भेद - प्रभेद; कर्म की पौद्गलिकता एवं अवस्थायें आत्मा और कर्म का पारस्परिक सम्बन्ध एवं मुक्ति की प्रक्रिया
ईकाई 5	भारतीय दर्शन में कर्मवाद; मनोवैज्ञानिक परिपेक्ष्य में कर्मवाद; कर्मवाद और पुनर्जन्म; जैन कर्म सिद्धांत का उद्भव एवं विकास; गुणस्थान

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. अर्हं ध्यान योग, मुनि प्रणम्यसागर
2. प्रेक्षा - अनुप्रेक्षा, आचार्य तुलसी
3. जैन कर्म सिद्धांत और मनोविज्ञान, डॉ रतन लाल जैन

4. कर्म बंध विज्ञान, मुनि प्रणम्य सागर
5. कर्म काण्ड , आचार्य नेमिचन्द्र
6. ज्ञानार्णव , आचार्य शुभचन्द्र
7. कर्म सिद्धान्त, छुल्लक जिनेन्द्रवर्णी

Year-1

Semester- 2

Course code	CC - 21
Course name	**जैन दार्शनिक प्राकृत साहित्य**
ईकाई 1	जैन दार्शनिक प्राकृत साहित्य का उद्भव एवं विकास: आचार विषयक साहित्य; ज्ञान विषयक साहित्य; तत्त्व विषयक साहित्य प्रमाण विषयक साहित्य; नय विषयक साहित्य
ईकाई 2	जैन दार्शनिक प्राकृत साहित्य के प्रमुख आचार्य एवं ग्रंथकार: आचार्य कुन्दकुन्द; आचार्य वट्टकेर; आचार्य शिवार्य; आचार्य सिद्धसेन; आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धांतचक्रवर्ती
ईकाई 3	जैन दार्शनिक प्राकृत साहित्य की कृतियों का परिचय: प्रवचनसार; मूलाचार; भगवती आराधना; सन्मति सूत्र; गोम्मटसार (जीवकांड एवं कर्मकांड)

ईकाई 4	प्राकृत साहित्य में वर्णित प्रमुख दार्शनिक सिद्धांत: आचारमीमांसा; तत्त्वमीमांसा; ज्ञानमीमांसा; प्रमाणमीमांसा; नय व्यवस्था
ईकाई 5	भारतीय दार्शनिक सिद्धांतो से प्राकृत साहित्य के सिद्धांतो का तुलनात्मक अध्ययन: सांख्य दर्शन; न्याय दर्शन; वैशेषिक दर्शन; मीमांसा दर्शन; बौद्ध दर्शन; चार्वाक दर्शन

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. जैन साहित्य का इतिहास- पंडित कैलाशचंद्र शास्त्री
2. तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परंपरा-डॉ नेमिचंद्र शास्त्री
3. जैन दर्शन- पंडित महेंद्रकुमार न्यायाचार्य
4. जैन तत्त्व मनीषा भाग १- आचार्य विनिश्चय सागर महाराज
5. जैन दार्शनिक साहित्य का सिंहावलोकन -दलसुख मालवणिया
6. प्रवचनसार- आचार्य कुन्दकुन्द, पद्यानुवाद- मुनि प्रणम्यसागर

Course code	**CC - 22**
Course name	**जैन दार्शनिक संस्कृत साहित्य**
ईकाई 1	जैन दार्शनिक संस्कृत साहित्य का उद्भव एवं विकास: आचार, ज्ञान, तत्त्व, प्रमाण एवं नय विषयक संस्कृत जैन साहित्य

ईकाई 2	जैन दार्शनिक संस्कृत साहित्य के प्रमुख आचार्य: आचार्य उमास्वामी; आचार्य समन्तभद्र; आचार्य हरिभद्र; आचार्य अकलंक; आचार्य हेमचन्द्र
ईकाई 3	जैन दार्शनिक संस्कृत साहित्य के आचार्यों की कृतियों का संक्षिप्त परिचय: तत्त्वार्थसूत्र; स्वयंभूस्तोत्र; षड्दर्शन समुच्चय; तत्त्वार्थराजवार्तिक; प्रमाण मीमांसा
ईकाई 4	जैन संस्कृत साहित्य में वर्णित प्रमुख दार्शनिक सिद्धांत: आचार मीमांसा; द्रव्य मीमांसा; तत्त्व मीमांसा; ज्ञान मीमांसा; नय मीमांसा;
ईकाई 5	भारतीय दार्शनिक सिद्धांतों से संस्कृत साहित्य में उपलब्ध जैन दार्शनिक सिद्धांतों का तुलनत्मक अध्ययन: सांख्य दर्शन; न्याय दर्शन; वैशेषिक दर्शन; मीमांसा दर्शन; बौद्ध दर्शन; चार्वाक दर्शन;

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. जैन दार्शनिक साहित्य के विकास की रूपरेखा- दलसुख मालवणिया
2. जैन तत्त्व मनीषा भाग १- आचार्य विनिश्चय सागर जी महाराज
3. जैन दर्शन तथा साहित्य का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव- डॉ नरेंद्र भानावल
4. जैन दर्शन- पंडित महेंद्र कुमार न्यायाचार्य
5. तीर्थंकर महावीर तथा उनकी आचार्य परंपरा- डॉ नेमिचन्द्र शास्त्री
6. जैन साहित्य का इतिहास- पंडित कैलाशचंद्र शास्त्री
7. संस्कृत काव्य के विकास में जैन कवियों का योगदान- डॉ नेमिचन्द्र शास्त्री

Course code	**PC - 21**
Course name	**जैन ज्ञान मीमांसा एवं जैन न्याय**
ईकाई 1	जैन ज्ञान मीमांसा का उद्भव और विकास ज्ञान और ज्ञेय दर्शन का स्वरुप एवं उसके भेद
ईकाई 2	ज्ञान के भेद १. मतिज्ञान विवेचन २. श्रुतज्ञान विवेचन ३. इन्द्रिय और मन
ईकाई 3	अवधिज्ञान विवेचन मनःपर्ययज्ञान विवेचन केवलज्ञान विवेचन
ईकाई 4	जैन न्याय का उद्भव एवं विकास भारतीय न्याय के विकास में जैनाचार्यों का योगदान प्रमाण का लक्षण एवं भेद प्रत्यक्ष प्रमाण एवं उसके भेद
ईकाई 5	परोक्ष प्रमाण स्मृति, प्रत्यभिज्ञान, तर्क , आगम का स्वरुप

	प्रमेय, प्रमिति, प्रमाता का स्वरुप अनुमान, व्याप्ति एवं हेतु का स्वरुप

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. जैन न्याय- पं. कैलाश चंद शास्त्री
2. जैन दर्शन- पं. महेंद्र कुमार
3. जैन न्याय की भूमिका- डा. दरबारीलाल कोठिया
4. आगम युग का जैन दर्शन- पं. दलसुख मालवणिया
5. प्रवचनसार - आ. कुन्दकुन्ददेव
6. प्रवचनसार- आचार्य कुन्दकुन्द, पद्यानुवाद- मुनि प्रणम्यसागर
7. न्याय मंदिर- आचार्य माणिक्यनन्दी

Course code	PC - 22
Course name	**जैनधर्म दर्शन एवं महात्मा गांधी**
ईकाई 1	जैन धर्म, दर्शन का परिचय एवं विश्लेषण - अहिंसा, पंचमहाव्रत, अनेकांतवाद, समता एवं उसका स्वरुप
ईकाई 2	भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का प्रभाव
ईकाई 3	महात्मा गाँधी का जीवन परिचय एवं गांधीवादी विचार इश्वर, सत्य अहिंसा, पर्यावरण विज्ञान
ईकाई 4	महात्मा गाँधी पर जैन धर्म का प्रभाव
ईकाई 5	महात्मा गाँधी के विचारो का भारतीय समाज पर प्रभाव

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. जैन धर्म- डा. कैलाशचंद्र शास्त्री
2. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान- डा. हीरालाल जैन
3. जैन संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण- पप्रो. प्रेम सुमन जैन
4. गाँधी दृष्टि- प्रो. रामजी सिंह

5. जैन धर्म- डा. जगदीशचंद्र जैन
6. जैन धर्म, दर्शन- डा. रमेशचंद्र जैंजाइन
7. गाँधी, गीता एवं जैन धर्म- प्रो. सागरमल जैन

Year 2

Semester 1

Course code	CC - 31
Course name	**जैन दर्शन और भारतीय दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन**
ईकाई 1	तत्वमीमांसा: सत्त् का स्वरुप- जैन, बौद्ध एवं वेदांत; आत्मा का स्वरुप- जैन, वेदांत, सांख्य, न्याय; पुद्गल- जैन, सांख्य, न्याय; मोक्ष- जैन, बौद्ध, वेदान्त, न्याय; कारण-कार्य सम्बन्धवाद- जैन, बौद्ध- न्याय, सांख्य
ईकाई 2	आचार मीमांसा: अहिंसा- जैन, बौद्ध, मीमांसा,भक्ति वेदांत; अपरिग्रह- जैन, बौद्ध, योग, वेदांत; तप- जैन, बौद्ध
ईकाई 3	व्रत - जैन, बौद्ध, योग; कर्म- जैन, बौद्ध, योग, वेदांत; अविद्या- जैन, बौद्ध, वेदांत
ईकाई 4	ज्ञान मीमांसा: अनेकांत- जैन, मीमांसा, बौद्ध, वेदांत; प्रमाण- जैन, बौद्ध, न्याय, मीमांसा; अनुमान- जैन, बौद्ध, न्याय

ईकाई 5	ध्यान योग- ध्यान स्वरुप- जैन, बौद्ध, योग; ध्यान के भेद- जैन, बौद्ध, योग; विभिन्न ध्यान प्रणालियाँ- जैन तथा अन्य दर्शनों में; कर्म, ज्ञान, भक्ति- जैन, गीता

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. न्याय विनिश्चय विवरण (भाग-२) - आचार्य वादिराज
2. आप्तमीमांसा - पं. दलसुख मालवणिया
3. जैन, बौद्ध और गीता के आचार दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन- डा. सागरमल जैन
4. आप्तमीमांसा तत्व दीपिका- प्रो. उदयचंद जैन
5. भारतीय तत्वविद्या- प.सुखलाल जी संघवी

Course code	CC - 32
Course name	**जैन धर्म दर्शन और भारतीय धर्म दर्शन**
ईकाई 1	प्रमुख दार्शनिक सिद्धांतों की तुलना: अरस्तु के द्रव्य एवं आकार का जैन दृष्टि से; डेकार्ट के द्वैतवाद का जैन द्वैतवाद से; लाइबनीज़ का चिदणुवाद और जैन आत्मवाद; कांत का नीतिशास्त्र और जैन आचारशास्त्र
ईकाई 2	जैन दर्शन और पाश्चात्य दर्शनों की तुलना; आत्मा और शरीर सम्बन्ध (डेकार्ट, स्पिनोज़ा, लाइबनीज़)
ईकाई 3	जैन धर्म और ईसाई धर्म का तुलनात्मक अध्ययन; जैन धर्म और इस्लाम धर्म का तुलनात्मक

	अध्ययन; जैन धर्म और पारसी धर्म का तुलनात्मक अध्ययन; जैन धर्म और कन्फूसियस धर्म का तुलनात्मक अध्ययन
ईकाई 4	द्रव्य (डेकार्ट, स्पिनोज़ा) का तुलनात्मक अध्ययन; जगत (स्पिनोज़ा, लाइबनीज़, प्लाटिनस,वर्कले)
ईकाई 5	आधुनिक सन्दर्भ में जैन धर्म-दर्शन: आर्थिक विषमता एवं अपरिग्रह; पर्यावरण एवं अहिंसा; लोकतंत्र एवं अनेकांत; स्वस्थ्य - समाज - संरचना एवं अणुव्रत

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. प्राच्या एवं पाश्चात्य दर्शन - डॉक्टर ऐन. के. देवराज
2. विश्व धर्म-दर्शन-महामूर्ति - श्री प्राणनाथ
3. जैन धर्म और जीवन मूल्य - डॉक्टर प्रेमसुमन जैन
4. पर्यावरण और जैन धर्म - डॉक्टर प्रेमसुमन जैन
5. लोकतंत्र और समाज - आचार्य महाप्रज्ञ
6. पाश्चात्य दर्शन का समस्यात्मक विवेचन - डॉक्टर रामनाथ शर्मा

Course code	PC - 31
Course name	**जैन धर्म-दर्शन के मौलिक सिद्धांत**
ईकाई 1	जैनधर्म: जैनधर्म का सामान्य परिचय; जैन धर्म की परम्परा;

	जैन धर्म का स्वरुप; जैन धर्म का महत्व; जैन धर्म में कुलकर एवं तीर्थंकर
ईकाई 2	जैन आचार: जैन धर्म की आचार परम्परा; अणुव्रत, गुणव्रत, शिक्षाव्रत, महाव्रत, मूलगुण
ईकाई 3	जैन तत्वमीमांसा: पंचास्तिकाय; छहद्रव्य; सात तत्त्व; नव पदार्थ
ईकाई 4	जैनदर्शन की प्रमाण व्यवस्था: प्रमाण का स्वरुप एवं भेद-प्रभेद; पांच ज्ञान एवं उसके भेद; प्रत्यक्ष प्रमाण; परोक्ष प्रमाण; अनुमान प्रमाण; आगम प्रमाण
ईकाई 5	अनेकांत और स्याद्वाद: अनेकांत और स्याद्वाद की व्यापकता; स्याद्वाद; स्यात- निपात का अर्थ; सप्तभंगी नय विचार; आध्यात्मिक नय - निश्चय और व्यव्हार निक्षेप विचार

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. जैनधर्म- पं . कैलाशचंद्र शास्त्री।
2. जैनदर्शन- पं. महेंद्र कुमार न्यायाचार्य।
3. जैन न्याय- पं. कैलाशचंद्र शास्त्री।
4. प्रमेय कमलमार्तण्ड परिशीलन- पं. उदय चंद्र जैन।
5. दार्शनिक समन्वय की जैन दृष्टि - डा. अनेकांत कुमार जैन।
6. तत्व विज्ञान, मुनि प्रणम्य सागर।
7. व्रत विज्ञान, मुनि प्रणम्य सागर।

Course code	PC - 32
Course name	**आचार्य कुन्दकुन्द और उनका साहित्य**
ईकाई 1	जैन आचार्य परम्परा में आचार्य कुन्दकुन्द का स्थान एवं परिचय: शिलालेखों में आचार्य कुन्दकुन्द आचार्य कुन्दकुन्द का समय आचार्य कुन्दकुन्द के पांच नाम आचार्य कुन्दकुन्द विषयक कथाएं
ईकाई 2	आचार्य कुन्दकुन्द द्वारा रचित कृतियाँ- प्रवचनसार समयसार नियमसार रयणसार अष्टप्राभृत बारस अणुवेक्खा भक्तिसंग्रह
ईकाई 3	नियमसार (गाथा:- 1 से 70 तक)
ईकाई 4	प्रवचनसार - ज्ञानाधिकार
ईकाई 5	जैन ग्रंथो में आचार्य कुन्दकुन्द का विशिष्ट अवदान;

	कुन्दकुन्दाचार्य की प्रमुख कृतियों में दार्शनिक दृष्टि

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. नियमसार - आचार्य कुन्दकुन्द, पद्यानुवाद- मुनि प्रणम्यसागर
2. प्रवचनसार- आचार्य कुन्दकुन्द, पद्यानुवाद- मुनि प्रणम्यसागर
3. आचार्य कुन्दकुन्द अवदान- प्रो. ऋषभचंद्र जैन
4. कुन्दकुन्द भारती - डा. पन्नालाल जैन साहित्याचार्य
5. कुन्दकुन्दाचार्य की प्रमुख कृतियों में दार्शनिक दृष्टि - डा. सुषमा गांग
6. भक्तिसंगहो - आचार्य सुनील सागर
7. समयसार- आचार्य कुन्दकुन्द, पद्यानुवाद- मुनि प्रणम्यसागर

Year 2

Semester 2

Course code	CC - 41
Course name	**जैन शिल्प, स्थापत्य एवं शिक्षा**
ईकाई 1	जैन शिल्प एवं स्थापत्य: दक्षिण भारत की जैन गुफाएं एवं मंदिर खजुराहो, देवगढ़, पालिताना, माउंट आबू के प्रमुख प्राचीन जैन मंदिर
ईकाई 2	जैन मूर्तिकला, चित्रकला एवं प्रतिमा विज्ञान भारत में प्राप्त प्रमुख जैन मुर्तियाँ श्रवणबेलगोल एवं मथुरा से प्राप्त प्रतिमाऐं
ईकाई 3	जैन शिक्षा के प्रमुख केंद्र श्रवणबेलगोल, जैसलमेर, अहमदाबाद, वाराणसी, वैशाली, जयपुर, दिल्ली
ईकाई 4	विदेशो में जैन धर्म, स्थापत्य एवं कला
ईकाई 5	जैन धर्म का समाज पर प्रभाव: शाकाहार एवं दान जैन धर्म में नारी का स्थान

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. जैन पांडुलिपि एवं शिलालेख: एक परिशीलन- प्रो. राजाराम जैन
2. जैन शिलालेख संग्रह- डा. हीरालाल जैन
3. भगवान महावीर एवं उनकी तीर्थंकर परम्परा- डा. नेमिचन्द्र शास्त्री
4. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान- डा. हीरालाल जैन
5. जैनधर्म - डा. कैलाशचन्द्र शास्त्री
6. जैन दर्शन और संस्कृति का इतिहास- प्रो. बी. सी. जैन
7. जैन दर्शन और संस्कृति का इतिहास- डा. भागचंद्र भास्कर

Course code	CC - 42
Course name	**जैन दर्शन में आप्तमीमांसा**
ईकाई 1	आप्त की परिभाषा श्रेयो मार्ग संसिद्धि श्रेयो मार्ग प्रणेता आप्त के गुण जैनागम ग्रंथो के मूलकर्ता एवं उत्तरकर्ता
ईकाई 2	आप्त तत्व विचार एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि
ईकाई 3	तीर्थ प्रवर्तक आप्त अनुमान प्रयोग से आप्त सिद्धि इश्वर सिद्धि का आभाव जगतकर्त्वय का निरास
ईकाई 4	आप्त की वीतरागता, सर्वज्ञता और हितोपदेशिता आप्त के दोष और आवरण की हानि, अपरिहार्य दोष के आभाव से वीतराग की संसिद्धि आवरण के क्षय से सर्वज्ञ सिद्धि सामान्य और विशेष से सर्वज्ञसिद्धि
ईकाई 5	आप्त तत्व निर्णय में लाभ:

	समाजहित संरक्षण में यथार्थ उपदेश की सार्थकता कुरीति परित्याग धर्ममार्ग का अनुसरण मोक्षमार्ग के अवलंबन में श्रेयोसिद्धि

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. आप्त मीमांसा - समन्तभद्राचार्य
2. आप्त परीक्षा - आचार्य विद्यानंदी
3. आप्तमीमांसा तत्वदीपिका - प्रोफेसर उदयचंद्र जैन

Course code	PC - 41
Course name	**आधुनिक प्राकृत जैन साहित्य**
ईकाई 1	आचार्य सुनील सागर जी महाराज द्वारा रचित प्राकृत जैन साहित्य: भावणासारो, वयणसारो, थुदिसंगहो, णियप्पज्झाणसारो, भावालोयणा
ईकाई 2	आचार्य वसुनन्दी महाराज द्वारा रचित प्राकृत जैन साहित्य: णंदिणंद सुत्तं, रट्ठ संति महाजण्णो, अज्ज सक्किदी जदि किदिकम्मं, धम्मसुत्तं, अहिंसगाहारो, जिणवरथोत्तं, तत्त्वसारो, विज्जावसु सावयायारो
ईकाई 3	मुनि श्री प्रणम्यसागर जी महाराज द्वारा जय रचित प्राकृत साहित्य: तित्थयर भावणा, धम्मपह, दार्शनिक प्रतिक्रमण, अष्टपाहुड (नंदिनी टीका), पाइय सिक्खा भाग (1 से 4), बारहभावणा
ईकाई 4	मुनि आदित्यसागर जी महाराज द्वारा रचित प्राकृत जैन साहित्य: समाधितंत्र अनुशीलन, स्वानुभव तरंगिणी ग्रन्थों का प्राकृत भाषानुवाद, तत्त्वबोध, बोध वाक्यामृत, दिव्य वयणं, तत्त्व तरंगिणी का परिचय देशना बिन्दु देशना संचय
ईकाई 5	आचार्य चन्दन मुनि और मुनि विमल कुमार रचित प्राकृत जैन साहित्य: रयणवालकहा, पाइयपच्चूसो पियंकर कहा, पाइय पडिबिंबो, अंसु-मुत्ता

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. सुनील प्राकृत समग्र - आचार्य सुनील सागर
2. तित्थयर भावणा, मुनि प्रणम्यसागर
3. धम्मकहा, मुनि प्रणम्यसागर
4. दार्शनिक प्रतिक्रमण, मुनि प्रणम्यसागर
5. पाइय सिक्खा भाग 1 से 4, मुनि प्रणम्यसागर
6. अष्टपाहुड (टीका, मुनि प्रणम्यसागर
7. आचार्य सुनील सागर जी महाराज एवं उनकी प्राकृत कृतियों का परिचय - डॉ आशीष कुमार जैन
8. अंसु मुत्ता और थूलिभद्दो - मुनि विमल सागर
9. इट्ठोवासभासो, मुनि आदित्यसागर
10. बीसवीं शताब्दी से रचित प्राकृत वाङ्मय का दार्शनिक अनुशीलन, डॉ आशीष कुमार जैन

Course code	PC - 42
Course name	**लघुशोध प्रबन्ध**
ईकाई 1	जैन साहित्य की सूक्ष्म चिंतनपरक क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान
ईकाई 2	तर्कपद्धति का सम्यक् अभिज्ञान एवं लघु शोध को लिखने की क्षमता विकास करना
ईकाई 3	जैन धर्म की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना
ईकाई 4	तार्किक अनुकूलन की सोच विकसित करना
ईकाई 5	चिन्तन के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियों एवं प्रयोगों का विकास करना

सन्दर्भ ग्रन्थ:

विशेष: प्रत्येक विद्यार्थी को जैन साहित्य के प्राचीन आचार्य एवं उनके साहित्य पर 100 पृष्ठों का लघु शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करना है।